करौली ब्लॉक के नगरीय पारिस्थितिकी तन्त्र का एक विशेष अध्ययन

*बिरम सिंह गुर्जर
**डॉ. इन्द्राज गुर्जर

प्रस्तावना

नगरीय जीवन वह जीवन है जिसमें बहुत सारे लोग साथ–साथ रहते है। वर्तमान में तो एक नगरीय क्रांति सी दिखाई पड़ती है क्योंकि समस्त संसार में लोग नगरों और शहरों की तरफ पलायन कर रहे हैं। 1800 ई. में विश्व की जनसंख्या का केवल 5 प्रतिशत ही शहरी आबादी थी (50 मिलियन लोग)। 1985 में यह बढ़कर 2 बिलियन हो गई। वर्तमान में विश्व की कुल जनसंख्या का 45 प्रतिशत शहरी आबादी है और 2030 तक 60 प्रतिशत से अधिक लोग शहरों मे रह रहे होंगे। अध्ययन क्षेत्र में नगरीय पारिस्थितिकी वास्तविक मायनों में करौली जिला मुख्यालय में स्थित है जो कि एक जिला परिषद् है यहाँ की कुल जनसंख्या जनगणना 2011 के अनुसार 82960 है जिसमें पुरूषों की संख्या 43908 एवं महिलाओं की संख्या 39052 है। नगरीय पारिस्थितिकी में जनसंख्या के साथ साथ उनके निवास की विभिन्न दशाओं और उनके क्रियाकलापों का पारस्परिक समन्वय का विश्लेषित अध्ययन होता है साथ ही उन अन्तर–क्रियाओं से उत्पन्न दशाओं के सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं में सामन्जस्य स्थापित किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र करौली जिले का करौली ब्लॉक है जहाँ वर्षा का वितरण सामान्य से अधिक रहता है तथा यहाँ की अपवाह प्रणाली भी जलग्रहण की उपयुक्त दशाओं को प्रस्तुत करती है। यह सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र करौली जिला मुख्यालय के चारों ओर लगभग 20 किमी की दूरी तक फैला हुआ है। जिसका अक्षांशीय विस्तार 26º26'15" उत्तरी अक्षांश से 26º33'45" उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार 76º54' पूर्वी देशान्तर से 77º09'15" पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।

इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1384 वर्ग किमी है। अवस्थिति के अन्तर्गत इसके उत्तर पश्चिम में सवाईमाधोपुर जिला, उत्तर पूर्व में धौलपुर जिला, पूर्व में मण्डरायल तहसील, दक्षिण में उत्तर में हिण्डौन तहसील तथा पश्चिम में दौसा जिला अवस्थित हैं। अध्ययन क्षेत्र में करौली जिला मुख्यालय एवं 46 ग्राम पंचायतों को शामिल किया गया है जिसमें लगभग 207 राजस्व ग्राम आते हैं। अध्ययन क्षेत्र अरावली पर्वत माला के पूर्वी में स्थित है।

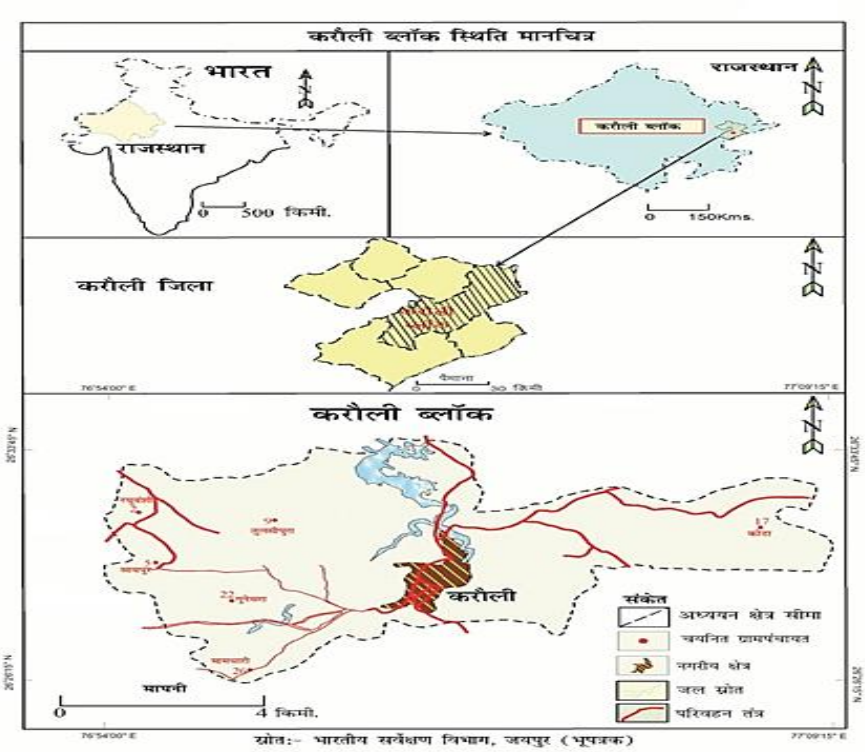

मानचित्र : करौली ब्लॉक की अवस्थिति

उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र में नगरीय पारिस्थितिकी की विशेषताओं की जानकारी एकत्रित करना।
2. नगरीय पारिस्थितिकी से होने वाले दुष्प्रभावों का पता लगाना।

परिकल्पना

1. तीव्र गति से बढ़ता नगरीकरण विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों की बढ़ोतरी के लिए उतरदायी होता है।

शोध विधि

उक्त अध्ययन में उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए विषय पर उपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रतिवेदनों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र की सूचनाएँ सरकारी कार्यालयों से एकत्रित करके विश्लेषित की गयी है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सामग्री तथा आंकड़ों का एकत्रीकरण निम्नलिखित स्रोतों से किया गया है –

1. **प्राथमिक स्रोत :** इस सम्बन्ध में अनुसूची, प्रश्नावली, कार्यकरण तथा परिचर्चा के बारे में व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से उपयोग किया गया है।
2. **द्वितीय स्रोत :** इस सम्बन्ध में प्रकाशित व अप्रकाशित सामग्री, पत्र–पत्रिकाओं, लेखों, उद्योगों की सूचनाओं का उपयोग किया गया है।

नगरीय पारिस्थितिकी की विशेषताएं

1. करौली नगरीय क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व अधिक पाया जाता है जो कि जनसंख्या के सघन निवास को प्रदर्शित करता है।
2. अध्ययन क्षेत्र में भीड़–भाड़, घरों की कमी तथा झोपड़ पट्टी में वृद्धि हुई है।
3. शहरी क्षेत्र उत्तरजीविता के लिए उर्जा, खाद्य पदार्थ, वस्तुओं तथा अन्य सामान की बढ़ती हुई मात्रा का बाहर से आयात करते हैं।
4. अत्यधिक मात्रा में ठोस और द्रव अपशिष्ट पदार्थ उत्पन्न करते है तथा वायु प्रदूषक पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्याएं उत्पन्न करते हैं।
5. रोजगार के अधिक अवसर और साथ ही अत्यधिक प्रतिस्पर्धा पायी जाती है।
6. बेहतर शिक्षा सुविधाएं उपलब्ध हैं।
7. बेहतर चिकित्सीय सुविधाएं और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं।
8. मनोरंजन के विविध स्रोत मौजूद हैं।

नगरीय पारिस्थितिकी के लाभ

1. आर्थिक दृष्टि से सुविकसित क्षेत्र होता है।
2. औद्योगिक वृद्वि के केन्द्र पनपने से आर्थिक विकास हुआ है।
3. अध्ययन क्षेत्र व्यापार के केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है।
4. बहुसांस्कृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण सुदृढ़ हुआ है।
5. कम शिशु मृत्युदर पायी जाती है।
6. राजनीतिक गतिविधियों में वृद्धि हुई है।

नगरीय पारितंत्रों से होने वाले दुष्प्रभाव

1. नगरीय पारितंत्र ग्रामीण पारितंत्रों की तुलना में अधिक संसाधनों को उपभोग करते हैं तथा अधिक कचरा उत्पन्न करते हैं।
2. नगरीय क्षेत्र अत्यधिक प्रदूषित होत हैं क्योंकि मोटर गाड़ियों और उद्योगों की बढ़ती हुई संख्या के कारण बहुत अधिक मात्रा में प्रदूषक उत्पन्न होते हैं।

3. उद्योगों और परिवहन के कारण उत्पन्न होने वाले ध्वनि प्रदूषण से ग्रस्त रहते है।
4. नगरीय पारितंत्रों में जल का अत्यधिक अभाव होता है।
5. अत्यधिक अपराधिक दर, अशांति और बेरोजगारी पायी जाती है।
6. विश्व के शहरों में बढ़ते हुए जनसंख्या घनत्व के कारण कुछ लोग झुग्गी झोपड़ियों में रहने को बाध्य हो जाते हैं।

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र में करौली ब्लॉक के नगरीय क्षेत्र की पारिस्थितिकी का अध्ययन किया गया है। करौली ब्लॉक में नगरीय जनसंख्या मुख्य रूप से करौली जिला मुख्यालय के नगर परिषद क्षेत्र में ही निवास करती है। यहां की कुल शहरी जनसंख्या 82960 (जनगणना 2011) है। यहाँ की जनसंख्या सघन रूप में निवास करती है। शिक्षा, रोजगार, मनोरंजन, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य आदि की सुविधाएं संतोषप्रद हैं। नगरीय क्षेत्र होने के कारण विभिन्न औद्योगिक व राजनीतिक गतिविधियां एवं कम शिशु मृत्यु दर पायी जाती है। अधिक जनसंख्या के कारण क्षेत्र में संसाधनों का अधिक उपयोग, परिवहन के साधनों की अधिकता, औद्योगिक कार्यों की अधिकता रही है। इन सभी गतिविधियों के कारण अध्ययन क्षेत्र वायु, जल, मृदा एवं ध्वनि प्रदूषण जैसी समस्याओं में अधिकता आई है।

***शोधार्थी**
भूगोल शास्त्र विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
****प्राध्यापक**
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
धोली कोठी, विराटनगर, जयपुर (राज.)

सन्दर्भ

1. शर्मा, एच.एस. एवं शर्मा, एम.एल. (2020), राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकाशन।
2. गौतम, अल्का (2020), कृषि भूगोल, शारदा प्रकाशन।
3. जोशी, रतन (2020), नगरीय भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रथ अकादमी, जयपुर।
4. बंसल, सुरेश चन्द्र (2018), नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन।
5. ब्लॉक सांख्यिकी रूपरेखा 2015, करौली ब्लॉक।